RNI No.: DEL/BIL/2004/14598

Youngster

YOUNGSTER • ESTABLISHED 2004 • NEW DELHI • SEP 2017 • PAGES 8 • PRICE 1/- • MONTHLY BILINGUAL (HIN./ENG.)

टेक्निया संस्थान, रोहिणी, दिल्ली को मिली नैक द्वारा ए श्रेणी

गुरु गोविन्द सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली से सम्बद्ध टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज (टायस) रोहिणी को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के स्वायत संस्थान राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यापन परिषद "नैक" बेंगलुरु द्वारा निर्धारित शैक्षणिक मापदण्डो का उत्ष्ट रूप से पालन करने पर 'ए' श्रेणी का संस्थान घोषित किया गया है। बेंगलुरु स्थित मुख्यालय में संपन्न हुई परिषद् की स्थायी कमेटी की बैठक में निरीक्षण दल की रिपोर्ट जिसने संस्थान का 28 और 29 अगस्त 2017 को नैक के मापदंडो का भौतिक परीक्षण किया तथा निरीक्षण दल की रिपोर्ट के आधार पर संस्था को 'ए' श्रेणी प्रदान किया जिसकी वैधता 5 साल तक रहेगी।

संस्था के अध्यक्ष डॉ राम कैलाश गुप्ता ने 'नैक' द्वारा 'ए' श्रेणी प्रदान किये जाने पर हर्ष व्यक्त किया तथा इसको टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज के चीफ एग्जीक्यूटिव डॉ ए के श्रीवास्तव, निदेशक डॉ अजय कुमार, शैक्षणिक सलाहकार प्रो सरोज कुमार दत्ता ,शिक्षकों एवं कर्मचारियों की कड़ी मेहनत तथा सेवाओं का परिणाम बताया।

विदित हो कि टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज (टायस) रोहिणी वर्ष 1998– 1999 से गुरु गोविन्द सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली से सम्बद्ध है तथा बीजेएमसी , बीबीए , एमबीए तथा एमसीए आदि प्रोफेशनल पाठ्यक्रमों में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा प्रदान कर रहा है। गुरु गोविन्द सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली से सम्बद्ध एक श्रेष्ठ संस्था है इसकी स्थापना डॉ राम कैलाश गुप्ता ने दिल्ली के छात्रों को व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से की थी जिसको लेकर संस्था निरंतर कार्यरत है।

– बालकृष्ण मिश्रा
– डा. राहुल शर्मा

श्री सिद्धि विनायक मंदिर, रोहिणी में धूम-धाम से महोत्सव संपन्न हुआ गणेश

श्री गणेश उत्सव आयोजन समिति रोहिणी, दिल्ली की ओर से इस वर्ष भी गणेशोत्सव पर विशाल शोभा यात्रा निकाली गई जो लगभग 4 से 6 किलोमीटर लंबी थी। इस शोभा यात्रा में विभिन्न देवी–देवताओं की झांकियां, बैण्ड–बाजे, शहनाई, नफीरी, ढोल–ताशे शामिल थे। शोभा यात्रा में भगवान के विभिन्न रूपों को झांकियों के माध्यम से दर्शाया गया। इस कड़ी में सबसे पहले श्री गणेश उत्सव आयोजन समिति रोहिणी दिल्ली के संस्थापक श्री राम कैलाश गुप्ता, पी सी गर्ग (पी सी ज्वेलर्स) व अन्य संस्थाओं के

Contd. Pg 1

सदस्यों द्वारा गणेश वंदना की गई व शोभा यात्रा की शुरुआत पी सी ज्वेलर्स पीतमपुरा से हुई जिसे श्री गुप्ता जी ने झंडी दिखाकर रवाना किया। इस यात्रा में टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांसड स्टडीज़ के बाइक सवारों का दस्ता सबसे आगे व इसके पीछे अष्टावक्र स्कूल ऑफ स्पेशल चिलड्रेंस, स्पेशल आर्ट स्कूल, टेक्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर्स ऐजूकेशन, टेक्निया इंटरनैशल स्कूल व अष्टावक्र इंस्टीट्यूट ऑफ रिहैबीलिएशन सांइसेस एण्ड रिर्सच की विभिन्न झांकियां थीं। इस झांकी में टेक्निया ग्रुप के सभी संस्थानों के छात्र–छात्रा, शिक्षकगण व अन्य सदस्य शामिल हुए।

शोभा यात्रा का लोगों ने जगह–जगह पर फूल–मालाओं से स्वागत किया और कई भक्तों ने खाने पीने की वस्तुओं को इस यात्रा में शामिल गणेश भक्तों में वितरित किया। कथा स्थल पर शोभा यात्रा के पहुंचने पर श्री गणेश जी की महाआरती की गयी व भक्तों के लिए विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। राजनेताओं के अलावा सामाजिक कार्यक्रताओं के साथ–साथ स्कूल व कॉलेज के बच्चों का उत्साह व भीड़ देखते ही बन रही थी। शोभा यात्रा के बाद देर शाम को श्रद्धालुओं के लिए डांडिया व विभिन्न रंगा रंग कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। उत्सव का समापन भक्तों ने गणपति के गीतों पर झूमते हुए किया।

–बालकृष्ण मिश्रा

डा.राधाकृष्णन —भारतीय दर्शन के व्याख्याता

समय–समय पर भारत में महान विभूतियों का जन्म होता रहा है, जिन्होंने अपनी प्रतिभा से समाज तथा देश नाम रोशन किया। ऐसे ही महापुरुषों में से एक डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन हैं जो बहुमुखी प्रतिभा के धनी होने के साथ–साथ महान शिक्षक भी थे, इसीलिए उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

डा. राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 को चेन्नई से लगभग 80 किलोमीटर दूर चित्तूर जिले के तिरूतानी शहर के एक छोटे से सीन प्रागानाडू में हुआ था। पिता की प्रेरणा और माता के प्यार से राधाकृष्णन की बचपन से ही हिन्दू धर्म के प्रति गहरी दिलचस्पी होने लगी थी। इनके पिता वीरस्वामी एक आदर्श शिक्षकस्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की और उसी वर्ष उनकी नियुक्ति मद्रास के ही प्रेसीडेंयी कॉलेज में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर के पद पर हुई। उनकी योग्यता और अध्ययनकुशलता के कारण 1918 में उन्हें तीस वर्ष की आयु में ही मैसूर विश्वविद्यालय के आचार्य पद पर नियुक्त किया गया। 1921 में कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति आशुतोष मुखर्जी के निमंत्रण पर मैसूर में किंग जार्ज में प्रोफेसरशिप इन मेंटल एंड मॉरल फिलॉस्फी के पद पर नियुक्त किया गया।

1926 में विज़िटिंग प्रोफेसर के रूप में डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने हारवर्ड विश्वविद्यालय

में आयोजित दर्शन कांग्रेस में भारत का प्रतिनिधित्व किया। वंहा जावेट, हास्कल आदि व्याख्यानमालाओं में भारतीय संस्कृति और धार्मिक मान्यताओं के संबंध में नवीन व्याख्याएं प्रस्तुत कर विदेशी वैज्ञानिकों को भी आश्चर्यचकित कर दिया। भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड इर्विन की संस्तुति पर उन्हें 1931 में नाईट की उपाधि प्रदान की गई।

एक उत्कृष्ट वक्ता के साथ–साथ डाराधाकृष्णन उच्चकोटि के लब्ध–प्रतिष्ठ लेखक एवं कुशाग्र बुद्धि के धनी व्यक्ति थे। उन्होंने एथिक्स एंड वेदांत एंड माई फिजिकल प्रोसपोसेशंस, भारतीय दर्शन, मनोविज्ञान की आवश्यकताएं, उपनिषदों का दर्शन, जीवन की हिंदू धारणा, जीवन की आदर्श धारणा, श्रीभागवद गीता, स्वतंत्रता और संस्कृति, विश्वास का पाना, महान भारतीय, ब्रह्मसूत्र और सत्य की खोज आदि अनेक पुस्तकें लिखीं।

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में 1936 में प्रोफेसर ऑफ ईस्टर्न रिलीजन्स एंड एथिक्स के पद पर नियुक्त होने वाले प्रथम भारतीय होने का गर्व उन्हें प्राप्त हुआ। उन्होंने 1937 में आंध्र विश्वविद्यालय का और उसके बाद अगस्त 1939 से 1948 तक काशी हिंदू विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद को सुशोभित किया। इसी वर्ष उन्हें यूनेस्को के अधिशासी मंडल का अध्यक्ष चुना गया और भारत सरकार ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का अध्यक्ष भी नियुक्त किया।

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने 1909 में मद्रास विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में उन्हें संविधान सभा का सदस्य बनाया गया। अपने प्रथम भाषण में उन्होंने स्वराज्य शब्द की दार्शनिक व्याख्या की। डा. राधाकृष्णन को भारत सरकार ने 1949 में सोवियत संघ में राजदूत नियुक्त किया। वहां पर उन्होंने भारत–सोवियत मैत्री की सुदृढ़ आधारशिला रखी। 1952 में भारतीय गणतंत्र का प्रथम उपराष्ट्रपति चुना गया। 1954 में उन्हें भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया गया। 13 मई 1962 को इस महान शिक्षाविद् एवं दार्शनिक ने भारत के द्वितीय राष्ट्रपति के पद को सुशोभित किया। जुलाई 1962 में उन्हें ब्रिटिश एकेडमी की ऑनरेरी फेलोशिप प्रदान की गई। डा. राधाकृष्णन की तुलना डा. बर्टेन्ड रसल, जी. ई. भूरे एवं कार्ल जास्पर्स जैसे विश्व प्रसिद्ध दार्शनिकों में की जाती है। शिक्षण और शिष्य उन्हें सबसे ज्यादा प्यारे थे। जिसने भी उनसे शिक्षा ली वे आज भी शिक्षक के रूप में उन्हें सम्मान से याद करते हैं।

एक दार्शनिक होने के कारण डा. राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन में धार्मिक, नैतिक एवं लोक कल्याणकारी विचारों का सामंजस्य, भारतीय संस्कृति के प्रति उदारभाव तथा विश्व बंधुत्व की भावना की प्रमुखता है। उनका उद्देश्य समाज को ऐसे श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित रूप में विकसित करना चाहते थे, जिससे प्रत्येक मनुष्य को अपनी योग्यता के अनुसार देश के विकास में योगदान का पूरा अवसर मिले। उनका मानना था कि मनुष्य के विचारों को श्रेष्ठ बनाने के लिए शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका है और शिक्षा से शिष्ट, चरित्रवान तथा स्वावलंबी नागरिक तैयार होते हैं।

उनकी राय में संसार के सभी मनुष्य एक ही परिवार के सदस्य हैं। इसलिए हमें एक दूसरे की सभ्यता, संस्कृति और राष्ट्रीयता की रक्षा करनी चाहिए। राष्ट्रपति पद का कार्यकाल पूरा करने के बाद वे मद्रास में रहकर दर्शनशास्त्र के अध्ययन–अनुशीलन में तल्लीन हो गए। 6 अप्रैल, 1975 को उन्हें दिल का दौरा पड़ा और डाक्टरों के अथक प्रयासों के बावजूद उनका 16 अप्रैल 1976 को उनका स्वर्गवास हो गया।

— राहुल मित्तल

शिक्षक ही समाज का शिल्पकार और मार्गदर्शक

शिक्षक का दर्जा समाज में हमेशा से ही पूजनीय रहा है। कोई उसे गुरु कहता है, कोई शिक्षक कहता है, कोई आचार्य कहता है, तो कोई अध्यापक या टीचर कहता है ये सभी शब्द एक ऐसे व्यक्ति को चित्रित करते हैं जो सभी को ज्ञान देता है, सिखाता है और जिसका योगदान किसी भी देश या राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करना है। सही मायनो में कहा जाये तो एक शिक्षक ही अपने विद्यार्थी का जीवन गढ़ता है। शिक्षक ही समाज की आधारशिला है। एक शिक्षक अपने जीवन के अन्त तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है और समाज को राह दिखाता रहता है, तभी शिक्षक को समाज में उच्च दर्जा दिया जाता है।

माता–पिता बच्चे को जन्म देते हैं। उनका स्थान कोई नहीं ले सकता, उनका कर्ज हम किसी भी रूप में नहीं उतार सकते, लेकिन शिक्षक ही हैं जिन्हें हमारी भारतीय संस्कृति में माता–पिता के बराबर दर्जा दिया जाता है क्योंकि शिक्षक ही हमें समाज में रहने योग्य बनाता है। इसलिये ही शिक्षक को समाज का शिल्पकार कहा जाता है। गुरु या शिक्षक का संबंध केवल विद्यार्थी को शिक्षा देने से ही नहीं होता बल्कि वह अपने विद्यार्थी को हर मोड़ पर उसको राह दिखाता है और उसका हाथ थामन

के
ि ल ए
हमेशा तैयार रहता है। विद्यार्थी के मन में उमड़े हर सवाल का जवाब देता है और विद्यार्थी को सही सुझाव देता है और जीवन में आगे बढ़ने के लिए सदा प्रेरित करता है।

एक शिक्षक या गुरु द्वारा अपने विद्यार्थी को स्कूल में जो सिखाया जाता है या जैसा वो सीखता है वे वैसा ही व्यवहार करते हैं। उनकी मानसिकता भी कुछ वैसी ही बन जाती है जैसा वह अपने आसपास होता देखते हैं। इसलिए एक शिक्षक या गुरु ही अपने विद्यार्थी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। सफल जीवन के लिए शिक्षा बहुत उपयोगी है जो हमें गुरु द्वारा प्रदान की जाती है। विश्व में केवल भारत ही ऐसा देश है जहाँ पर शिक्षक अपने शिक्षार्थी को ज्ञान देने के साथ–साथ गुणवत्तायुक्त शिक्षा भी देते हैं, जोकि एक विद्यार्थी में उच्च मूल्य स्थापित करने में बहुत उपयोगी है। जब अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश का राष्ट्रपति आता है तो वह भी भारत की गुणवत्तायुक्त शिक्षा की तारीफ करता है।

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी है तो उस देश को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी नहीं होगी तो वहाँ की प्रतिभा दब कर रह जायेगी बेशक किसी भी राष्ट्र की शिक्षा नीति बेकार हो, लेकिन एक शिक्षक बेकार शिक्षा नीति को भी अच्छी शिक्षा नीति में तब्दील कर देता है। शिक्षा के अनेक आयाम हैं, जो किसी भी देश के विकास में शिक्षा के महत्व को अधोरेखांकित करते हैं।

एक शिक्षक द्वारा दी ग्यी शिक्षा ही शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। शिक्षकों द्वारा प्रारंभ से ही पाठ्यक्रम के साथ ही साथ जीवन मूल्यों की शिक्षा भी दी जाती है। शिक्षा हमें ज्ञान, विनम्रता, व्यवहारकुशलता और योग्यता प्रदान करती है। शिक्षक को ईश्वर तुल्य माना जाता है। आज भी बहुत से शिक्षक शिक्षकीय आदर्शों पर चलकर एक आदर्श मानव समाज की स्थापना में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। लेकिन इसके साथ–साथ ऐसे भी शिक्षक हैं जो शिक्षक और शिक्षा के नाम को कलंकित कर रहे हैं, ऐसे शिक्षकों ने शिक्षा को व्यवसाय बना दिया है, जिससे एक निर्धन शिक्षार्थी को शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है और धन के अभाव से अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। आधुनिक युग में शिखक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ प्रदर्शक होता है जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाता है।

आज के समय में शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण हो गया है। शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण देश के समक्ष बड़ी चुनौती है। पुराने समय में भारत में शिक्षा कभी व्यवसाय या धंधा नहीं थी। गुरु एवं शिक्षक ही वो हैं जो एक शिक्षार्थी में उचित आदर्शों की स्थापना करते हैं और सही मार्ग दिखाते हैं। एक शिक्षार्थी को अपने शिक्षक या गुरु प्रति सदा आदर और कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। किसी भी राष्ट्र का भविष्य निर्माता कहे जाने वाले शिक्षक का महत्व यहीं समाप्त नहीं होता क्योंकि वह ना सिर्फ हमको सही आदर्श मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं बल्कि प्रत्येक शिक्षार्थी के सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती है।

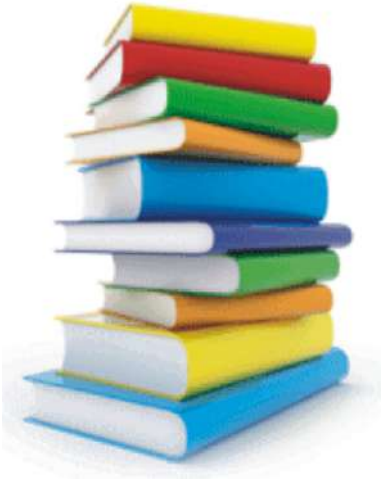

–प्रस्तुतिः सन्नी मुदगल, बीजेएमसी

TEACHER'S DAY CELEBRATION

SWACHHTA PAKHWADA

भारतीय भाषाओं के उभार का वक्त

पिछले दिनों बेंगलुरु में एक मेट्रो स्टेशन के सूचनापट पर हिंदी के प्रयोग को लेकर जब विवाद खड़ा करने की कोशिश की गई, तो मुझे पुराना मुहावरा याद आ गया– बासी कढ़ी का उबाल। वहां जो लोग राजनीतिक रोटियां सेंकने के लिए भाषाई नफरत का अलाव जलाना चाहते थे, वे पुनरू असफल हो गए हैं।

बेंगलुरु सर्वाधिक तेजी से उभरा महानगर है। एक निश्चित भूभाग में इंसानों की बड़ी बसावट तभी महानगर का स्वरूप ले पाती है, जब उनमें सह–अस्तित्व की भावना हो। बेंगलुरु ने हमेशा इस सिद्धांत का पालन किया। इस बार भी वहां के निवासी एक–दूसरे के समादर के मामले में सौ में सौ नंबर पाने के हकदार साबित हुए हैं। राजनीति की ओछी हरकतें तभी समाज पर असर डाल पाती हैं, जब वह खुद इनसे प्रभावित होना चाहता है। आप याद कर सकते हैं,बरसों पहले शिवसेना ने किस तरह दक्षिण भारतीयों और हिंदी भाषियों को जलील करने की कोशिश की थी, पर वह सिरे से नाकाम रही। कोलकाता और चेन्नई में भी कभी हिंदी विरोध का दावानल फूटा करता था, पर अब वह अतीत का किस्सा है। राजनेता बंबई को मुंबई, बंगलोर को बेंगलुरु, मद्रास को चेन्नई, कलकत्ता को कोलकाता या गुड़गांव को गुरुग्राम बना सकते हैं, मगर सिर्फ बोर्ड पर नया नाम पोत देने से शहरों की आत्मा नहीं बदला करती।

हम चाहें, तो इस नेक प्रवृत्ति पर इतरा सकते हैं।

आगामी 14 सितंबर को हम 'हिंदी दिवस' मनाने जा रहे हैं। यह ठीक है कि हिंदी को राजभाषा का आधिकारिक दर्जा हासिल है और यह देश के सबसे बडे भूभाग की साझी मिल्कियत है, इसके बावजूद मुल्क का हर नागरिक इसे समझने–बोलने में नाकाम है। कुछ लोग इसे हमारे राष्ट्रीय चरित्र की असफलता कहते हैं, मगर मैं अपनी आदत के मुताबिक कुछ सकारात्मक बिंदुओं पर चर्चा करने की इजाजत चाहूंगा। यहां मसला सिर्फ हिंदी नहीं, समस्त भारतीय भाषाओं के विकास और उनमें समानता के सूत्र तलाशने का है। इसी में सबकी भलाई निहित है।

बतौर उदाहरण एक निजी अनुभव आपसे बांटता हूं।

कुछ माह पूर्व नोएडा में मेरे फ्लैट की घंटी बजी, पत्नी ने दरवाजा खोला। सामने श्याम वर्ण का नौजवान खड़ा था। उसने दक्षिण भारतीय अंदाज की अंग्रेजी में पूछा कि क्या आपके यहां से 'एसेफोटिडा' मिल जाएगी?यह आम प्रचलन से परे का शब्द है, लिहाजा वह समझ नहीं सकीं। संवाद की शुरुआती जद्दोजहद के बाद उनकी समझ में आया कि युवक पड़ोस के फ्लैट में रहता है और उसे भोजन पकाने के लिए किसी मसाले की जरूरत है, पर वह मसाला है क्या?इस जटिल सवाल से मुक्ति पाने के लिए वह उसे रसोई में ले गईं और मसालदानी आगे बढ़ा दी। वांछित सामग्री अभी तक अबूझ थी। श्रीमतीजी ने इस बार खाद्य सामग्री से भरी समूची अलमारी खोल दी। युवक की आंखें चमकने लगीं और उसने एक डिब्बी की ओर इशारा किया। वह हींग चाहता था। चलते वक्त उसने तज्ञतापूर्वक प्रणाम के साथ 'हींग' शब्द का कई बार उच्चारण किया। बाद के दिनों में उसने बताया कि कुछ साल पहले वह तमिलनाडु से नौकरी के लिए 'सिलिकॉन वैली' गया था। उसकी अमेरिकी कंपनी अब भारत में जड़ें जमाना चाहती है। इसी मकसद से उसे नोएडा भेजा गया है। वह चंद महीने हमारे पड़ोस में रहा और हर मुलाकात के साथ हम उसके हिंदी ज्ञान में बढ़ोतरी पाते। बाद में, उसकी मां नोएडा आईं। पुत्र के प्रति हमारे वत्सल व्यवहार का शुक्रिया अदा करने के लिए वह हमारे घर भी आईं। श्रीमतीजी ने उनके जाने के बाद बताया कि वह सिर्फ तमिल जानती थीं और मैं हिंदी, पर कुछ देर में हमने संवाद के साझा सूत्र तलाश लिए थे। दोनों महिलाओं ने एक–दूसरे से खाना पकाने की विधि के अलावा तमाम जानकारियां साझा कीं। आज हमारे घर में अगर स्वादिष्ट सांभर बनता है, तो यह उसी मेल–मिलाप की सौजन्यपूर्ण भेंट है।

पता नहीं, चेन्नई स्थित उनके घर में दाल–रोटी पकती है या नहीं?

यह मिलना–जुलना 1991 के आर्थिक उदारीकरण की बड़ी देन है। इससे हिन्दुस्तान में कॉरपोरेटीकरण को बढ़ावा मिला और नई तकनीक के आगमन से बेंगलुरु, हैदराबाद और गुरुग्राम, नोएडा जैसे 'हब' विकसित हुए। ऐसे शहर अमेरिका या यूरोपीय

WORKSHOP ON ARTIFICIAL INTELLIGENCE & MACHINE LEARNING

GUEST LECTURE

THIS MONTH

September 22, 1862 - Otto von Bismarck became premier of Prussia. He forged a loose confederation of German states into a powerful nation, with Wilhelm I becoming Kaiser of the new German Empire.

•••

September 20, 1873 - The New York Stock Exchange was forced to close for the first time in its history as a result of a banking crisis during the financial Panic of 1873.

•••

September 17, 1862 - The bloodiest day in U.S. military history occurred as General Robert E. Lee and the Confederate armies were stopped at Antietam inMaryland by General George B. McClellan and numerically superior Union forces. By nightfall 26,000 men were dead, wounded, or missing.

•••

September 2, 1864 - During the American Civil War, Atlanta was captured by Sherman's Army. "Atlanta is ours, and fairly won," General William T. Sherman telegraphed President Lincoln.

•••

September 2, 1870 - Napoleon III surrendered to the Prussians during the Battle of Sedan, resulting in the fall of the Second French Empire.

•••

September 4, 1886 - The last major U.S.-Indian war came to an end as Geronimo was captured. He died of natural causes in 1909 at Fort Sill, Oklahoma.

•••

Compilation: Honey Shah

BASICS OF MEDIA

Aspect ratio: The width-to-height proportions of the standard television screen and therefore of all analog television pictures: 4 units wide by 3 units high. For DTV and HDTV, the aspect ratio is 16 × 9.

•••

Character Generator(C.G.): A dedicated computer system that electronically produces a series of letters, numbers, and simple graphic images for video display. Any desktop computer can become a C.G. with the appropriate software.

•••

Color Compatibility: Color signals that can be perceived as black-and-white pictures on monochrome television sets. Generally used to mean that the color scheme has enough brightness contrast for monochrome reproduction with a good grayscale contrast.

•••

Essential Area: The section of the television picture, centered within the scanning area, that is seen by the home viewer, regardless of masking or slight misalignment of the receiver. Also called safe title area or safe area.

•••

Flat A piece of standing scenery used as a background or to simulate the walls of a room.

Compilation: Rahul Mittal

Write All Indian Languages

महानगरों की तरह अपने मूल बाशिंदों से ज्यादा बाहर से आई प्रतिभाओं के चलते आबाद हैं। राष्ट्रीय एकता का जो काम शंकराचार्य जैसे समाज सुधारकों ने सदियों पूर्व धर्म के जरिए शुरू किया था, उसे आर्थिक उदारवाद ने अनजाने ही आगे बढ़ा दिया है। इन उभरते महानगरों का विकास यह भी जताता है कि हमें अपने मानसिक अवरोधों से मुक्ति पाने की कितनी जरूरत है?साझी संसति भावुक नारे से असलियत तक की यात्रा तभी पूरी कर सकेगी, जब अधिक से अधिक लोग मूल स्थान छोड़कर देश के दूसरे हिस्सों में बसना शुरू करें।

हर नया आगंतुक अपने साथ अपनी संसति के मूल तत्व लेकर आता है और जहां जा बसता है, वहां उसके पौधे रोपता चलता है।

आप गौर करें, तो पाएंगे कि इधर हिंदी ने अन्य भाषाओं के शब्द बड़ी तेजी से ग्रहण किए हैं। यही हाल अन्य भारतीय भाषाओं का है। जरूरत है, तो बस इसमें तेजी लाने की, क्योंकि भाषा अलगाव के अवरोधों को सबसे पहले खत्म करने की क्षमता रखती है। मेरी पत्नी और तमिलनाडु की उस महिला की लंबी बातचीत इसका उदाहरण है।उल्लेखनीय है कि लोगों को एक–दूसरे से जोड़ने में देश के सिने उद्योग ने भी बड़ी भूमिका अदा की है। बॉलीवुड की फिल्मों, गीत और संवादों ने दक्षिण में अच्छी–खासी दखल बनाई है। वहां के लोग हमारे सिने सितारों से उतना ही प्यार करते हैं, जितना रजनीकांत, कमल हासन, मोहन बाबू, रेखा, श्रीदेवी अथवा हेमा मालिनी ने उत्तर में पाया। अब तो तमाम दक्षिण भारतीय भाषाओं की फिल्में हर रोज डब होकर हिंदी में और मुंबइया सिनेतियां दक्षिण में दिखाई जाती हैं।

इसने राजनीतिज्ञों द्वारा रोपे गए अलगाव और घृणा को काफी कुछ कम किया है। बेंगलुरु इसका ताजातरीन उदाहरण है।

यहां यह भी ध्यान देने की बात है कि इधर के वर्षों में तकनीक ने नई संभावनाओं के दरवाजे खोले हैं। प्रायरू दो साल पहले गूगल इंडिया ने पाया कि हिंदी में 'कंटेंट कंजम्शन' साल–दर–साल 94 फीसदी की रफ्तार से बढ़ रही है, जबकि इसके मुकाबले अंग्रेजी में यह बढ़ोतरी 19 प्रतिशत है। माइक्रोसॉफ्ट के एक सर्वेक्षण का कहना है कि स्थानीय भाषाओं में इंटरनेट पर सामग्रियों की तलाश करने वालों की तादाद तेजी से बढ़ रही है। इंटरनेट पर देशज भाषाओं का विस्तार यकीनन उन दुराग्रहों को दूर करेगा, जो भारतीय भाषाओं में समानता–सूत्र स्थापित करने की राह में रोड़ा साबित हुए हैं। यह एक सुखद बदलाव का संकेत है।

जान लें, हिंदी भी तभी बुलंदी पर पहुंच पाएगी, जब हम उसके कपाट सावधानीपूर्वक अन्य भारतीय भाषाओं के लिए खोलेंगे। शुरुआत हो चुकी है, चाहें तो आप भी इस यज्ञ में हिस्सा ले सकते हैं।

Vol. 13 **No.** 9
RNI No.: DEL/BIL/2004/14598
Publisher: Ram Kailsah Gupta on behalf of Tecnia Institute of Advanced Studies, 3 PSP, Madhuban Chowk, Rohini, Delhi-85; **Printer:** Ramesh Chander Dogra; **Printed at:** Dogra Printing Press, 17/69, Jhan Singh Nagar, Anand Parbat, New Delhi-5
Editor: Rahul Mittal, responsible for selection of News under PRB Act. All rights reserved.

IMPORTANT QUOTES

"Reality is merely an illusion, albeit a very persistent one."
Albert Einstein

•••

"A little inaccuracy sometimes saves a ton of explanation."
H. H. Munro

•••

"It is dangerous to be sincere unless you are also stupid."
George Bernard Shaw

•••

"In any contest between power and patience, bet on patience."
W.B. Prescott

•••

"Make everything as simple as possible, but not simpler."
Albert Einstein

•••

"Well-timed silence hath more eloquence than speech."
Martin Fraquhar Tupper

•••

Compilation: Devashish Tondon

WINNERS v/s LOOSERS Part-69

The Winner says, "Let me do it for you".The Loser says, "That is not my job."

•••

The Winner sees an answer for every problem;The Loser sees a problem for every answer

•••

The Winner says, " It may be difficult but it is possible".The Loser says, "It may be possible but i t is too difficult."

•••

When a Winner makes a mistake, he says, "I was wrong";When a Loser makes a mistake, he says, "It wasn't my fault."

•••

A Winner makes commitments;
A Loser makes promises.

•••

Winners have dreams;
Losers have schemes.

To Be Continued In Next Issue-

Compilation: Rahul Mittal

All Students and Faculty are welcome to give any Article, Feature & Write-up along with their Views & Feedback at: **hodbjmc@tecnia.in**